" श्री राम "

16.9.2001

45 दिन के एकान्तवास के उपरान्त, दिल्ली लौटने पर न्यूयार्क, एवं वाशिंगटन में घटित दुर्घटना का विस्तृत वृतान्त सुनने को मिला – हृदय पीड़ा से तड़प उठा। श्री राम शरणम् संस्था के न्यूयार्क एवं मेरीलैंड में निवासित कुछ सदस्यों द्वारा दिये गये विवरण को पढ़कर हृदय अवर्णनीय वेदना से फड़फड़ाने लगा। अत: देश-विदेश में बसे राम-नाम के उपासकों को दो शब्द संदेश दिये बिना रहा न गया।

11 सितम्बर, 2001 का वह दुर्भाग्यपूर्ण दिवस, जब अमेरिका के दो महानगरों में व्यापक विध्वंस हुआ, अमेरिका के इतिहास द्वारा ही नहीं, अपितु विश्व इतिहास द्वारा भी यह विनाशकारी दिवस कभी भुलाया न जा सकेगा। सत्य है : " जिन तन लागे, सो तन जाने, कौन जाने पीर पराई"। परन्तु हम इस संस्था के सदस्यों ने अकथ पीड़ा का अनुभव किया है, यह भी उतना ही सत्य है। हम इतनी दूर बैठे अपने अमेरिकन बहन-भाईयों के लिये कुछ करने की उत्कट-इच्छा के बाबजूद भी कुछ नहीं कर सकते। काश ! इस घोर संकट के कुसमय हम व्यक्तिगत रुप से कुछ सहायता दे सकते – बेशक रोते हुओं के आंसू ही पोंछ देते –दो सान्तवना भरे शब्द ही कह देते। हमारा दुर्भाग्य, ऐसा सम्भव नहीं है। अतएव भारत, अमेरिका, योरुप एवं अन्य देशों में बसे श्री राम शरणम् संस्था के सभी सदस्यों को मेरा कर-बद्ध निवेदन है कि वे, उन सबके लिये जिनको संसार छोड़ सदा के लिये जाना पड़ा, परमेश्वर से प्रार्थना करें – " हे दयालु कृपालु प्रभु ! उन सबकी आत्मा को शान्ति प्रदान कर, जिनके प्रिय सदा के लिये बिछुड़ गये हैं, उनको इस अपूर्णीय क्षति सहन करने के लिये धैर्य दे, जिनकी किसी भी प्रकार की सम्पति नष्ट हुई है, उनके पुनर्वास के लिये, उनकी हानि की पूर्ति के लिये शीर्घ प्रबन्ध कर। हे राम ! सब को सुख-शान्ति प्रदान कर"। यह प्रार्थना नित्य करते रहें।

साथ ही साथ, जब राम-नाम जपें, जपते जपते, स्वामी जी महाराज द्वारा रचित धुन, प्रार्थना रुप में गुनगुनाते रहें – "शान्ति करो श्री राम जग में शान्ति करो"। अखण्ड जाप रखें तो उसमें पहले व बाद में श्री राम दरबार में हृदय से प्रार्थना करें – "हे राम ! ऐसा दुर्भाग्य-पूर्ण दिवस विश्व-इतिहास में फिर कभी भी किसी देशवासी को न देखना पड़े"। श्री राम तेरी सदा जय हो।

आप सबको विनम्र नमन एवं जय जय राम।

विश्वामित्र